International Journal of Applied Research 2016; 2(2): 249-251

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2016; 2(2): 249-251
www.allresearchjournal.com
Received: 18-12-2015
Accepted: 20-01-2016

डॉ. दीपक भारद्वाज
सह–आचार्य एवं विभागाध्यक्ष,
चित्रकला विभाग, राजकीय मीरा कन्या महाविद्यालय, उदयपुर,
राजस्थान, भारत

Correspondence
डॉ. दीपक भारद्वाज
सह–आचार्य एवं विभागाध्यक्ष,
चित्रकला विभाग, राजकीय मीरा कन्या महाविद्यालय, उदयपुर,
राजस्थान, भारत

राजस्थान की समकालीन कला में वरिष्ठ चित्रकारों का योगदान

डॉ. दीपक भारद्वाज

समय के साथ टूटती परम्पराओं, बदलते परिवेश और पर्यावरण ने राजस्थान के कला जगत को हमेशा से प्रेरित किया और लघु चित्र शैलियों की प्राचीन परम्परा और परिचित बिम्बों–प्रतिबिम्बों से हटकर राजस्थान के चित्रकारों ने प्रयोगधर्मिता का मार्ग चुना तथा कला के समकालीन परिवेश से अपने को जोड़ा। यहां के वरिष्ठ चित्रकारों तथा उनके सृजनात्मक वैविध्य ने एक सुदृढ़ राजस्थान की समकालीन कला का आधार स्तम्भ रखा तथा मौलिक अभिव्यकित द्वारा यदा की कला को समृद्ध किया तथा परवर्ती चित्रकारों को प्रेरित किया।

''राजस्थान की समकालीन कला में
वरिष्ठ चित्रकारों का योगदान''

कला में प्रचलित विभिन्न शैलियों तथा प्रवृत्तियों के सन्दर्भ में समकालीन एवं आधुनिक शब्द प्रायः समानार्थी रहे है। आधुनिक या समकालीन शब्द का तात्पर्य रचना निर्माण करने से है जो कलाकार की सहज प्रवृति होती है। इसी सहज प्रवृति के कारण ही कलाकार ने रूपात्मक सोन्दर्य को कला के माध्यम से प्रस्तुत करने का निरत्न प्रयास किया है ''समय काल तथा परिस्थितियों के आधार पर प्रत्येक युग की कला अपने समय की आधुनिक कला के रूप में मानी जाती रही है।'' [1]
भारतीय कला इतिहास में आधुनिक शब्द का प्रयोग लगभग 1880 ई. की कला तथा राजा रविवर्मा के चित्रों के संदर्भ में सर्वप्रथम किया गया। ''आधुनिक भारतीय कला का प्रारम्भ बंगाल में 1895 ई. से 1920 के मध्य प्रचलित कला शैली से माना जाता है।'' [2]

''स्वतन्त्रता के पूर्व दशक में बंगाल स्कूल के प्रभाव का जो बोलबाला था

उससे राजस्थान के चित्रकार भी प्रभावित रहे। किन्तु समय के साथ टूटती परम्पराओं, बदलते परिवेश और पर्यावरण ने राजसथान के कला जगत को भी प्रेरित किया और लघुचित्र शैलियों की लम्बी परम्परा और परिचित बिम्बों, प्रतिबिम्बों से हटकर राजस्थान के चित्रकारों ने प्रयोगधर्मिता का मार्ग चुना और कला के समकालीन परिवेश से अपने को जोड़ा।'' [3]
आधुनिक कला के विकास में जिसका योगदान उल्लेखनीय रहा वह थी 1957 में राज. ललित कला अकादमी की स्थापना, जिसकी वार्षिक प्रदर्शनियों के जरिये बहुत से चित्रकारो और मूर्तिकारों को रचनायें करने और उन्हें प्रदर्शित करने का अवसर मिला।
राजस्थान की कला में नई संवेदना का प्रवेश सन् 1960 के दशक के पश्चात् ही माना जाता है, क्योंकि परम्परा के बहुत गहरे और अक्षुण्ण प्रभाव के कारण राज्य में नयेपन को ग्रहण करने का आवेग या परम्परा को पूरी तरह अस्वीकृत करने का साहस अपेक्षाकृत देर से आया यह वह समय था जब एक तरफ तो परम्परावादी चित्रकार अपने कला आग्रहों या व्यवसायिक तकाजों से परम्परा की लीक को मिटने से बचाने के लिये काग्र कर रहे थे तो दूसरी ओर आधुनिक कला के प्रभाव के परिणाम स्वरूप कला में नई संवेदना प्रवेश कर रही थी।
राजस्थान की समकालीन कला में रामगोपाल विजयवर्गीय, भूरसिंह शेखावत, द्वारका प्रसाद शर्मा, बी. सी. गुई, कृपाल सिंह शेखावत तथा देवकी नन्दन शर्मा जो सभी परम्परावादी चित्रकार थे इन्होंने राष्ट्रीय स्तर पर अपनी मौलिक पहचान बनाये रखने के लिये परम्परागत शैली के आकारद तत्वों को नयी भाषा का रूप प्रदान कर चित्रण करना आरम्भ किया। इन्हीं कलाकारों के सृजनात्मक वैविध्य ने राजस्थान की परम्परावादी आधुनिक कला को नई दिशा प्रदान की जो एक सुदृढ़ राजस्थान की समकालीन कला का आधार–स्तम्भ बनी।

उपयुक्त चित्रकारों के कलात्मक योगदान को निम्नानुसार विशलेषित करना समीचिन होगा–

(1) अकारद तथ्वों के आधार पर
(2) रेखांकन
(3) विषयवस्तु
(4) प्राविधि

(1) रामगोपाल विजयवर्गीय

''निजी आधुनिक शैली पर आधारित चित्र जिसमें मानवीय आकारों का सरलीकृत रूप विजयवर्गीय की विशुद्ध कला में प्रयोग धर्मिता दिखाई देती है। यहां इनके चित्र पूर्णरूपेण अमूर्त न बनकर मानवीय आकारों को प्रतिबिम्बित करते दिखाई देते है।'' [4]

इनकी लयात्मक और अत्यन्त कोमल रेखाओं ने नारी स्वरूप के नये आयाम तथा अंग–प्रत्यंगो के लावण्य पारदर्शीय वस्त्र, तीखे नाकनक्श मेघदूत और शाकुन्तलम् जैसी साहितियक रचनाओं के माध्यम से प्रस्तुत किये है।

इन्होनें विषयवस्तु की दृष्टि से नारी प्रधान चित्रण सर्वाधिक किया इसके अलावा ग्रामीण परिवेश, दृश्य चित्रण, रामायण, महाभारत, भागवत् पुराण, गीतगोविन्द, ऋतु संहार, अभिज्ञान–शाकुन्तलम्, मेघदूत, विकमोर्वशीयम्, कुमारसम्भव, बिहारी सतसई, उमर खय्याम तथा कादम्बरी पर आधारित चित्रण किया।

शैलेन्द्र नाथ डे के सानिध्य में प्रवाही गतिमान रेखायें, रंग योजना का माधुर्य एवं कल्पना के समावेश से युक्त ''वाश पद्धति'' में सर्वाधिक चित्रण इनको राजस्थान के अन्य कलाकारों से अलग करता है। इसके अलावा इन्होंने राजस्थानी जनजीवन का चित्रण विस्तार से टेम्परा पद्धति में किया है।

भूर सिंह शेखावत

विविध कार्यों में व्यस्त नर–नारियों, पशु–पक्षियों के आकारों ने इनकी कलाकृतियों में अपनी विधिक मानसिकता और भाव–भंगिमाओं के साथ उद्घाटन पाया है।

श्री शेखावत ने ग्रामीण व शहरी सभ्यता एवं संस्कृति को अत्यन्त बारीक तथा प्रभावपूर्ण रेखांकन द्वारा चित्रित किया है। सूक्ष्म अवलोकन एवं यथार्थ रेखाओं ने इनकी कृत्तियों में निर्जीव विषयों को भी सजीव रूप प्रदान किया है।

राजस्थानी जनजीवन का यथार्थ चित्रण समन्वयात्मक वातावरण इनके चित्रों के प्रधान विषय थे तथा राजस्थानी नर–नारियों, वर्गो तथा व्यवसायियों का पैना अध्ययन इनका कलात्मक गुण था इसके अलावा इन्होने व्यक्ति चित्रण में भी दक्षता प्राप्त की।

''तैल और जल रंग दोनो के प्रयोग में इनकी समान दक्षता थी पाश्चात्य प्रभाववादी रंग योजना एवं प्रयोग विधि को अपनाकर इन्होंने तत्कालीन पारम्परिक सपाट रंग योजना की परम्परा को तोड़ तथा ''पैच पद्धति'' के द्वारा चित्रकृत्तियों में यथार्थ प्रभाव उत्पन्न करने का साहसिक प्रयोग किया।'' [5] तुलिका का मुक्त प्रवाह एवं कलाकार की विश्वसनीयता तथा अद्भुत क्षमता का समन्वय इनके चित्रों में दृष्टिगौचर होता है।

द्वारका प्रसाद शर्मा

चित्रण में यथार्थ आकृति की आन्तरिक रचना को उन्होंने महत्व दिया। मानवाकृति हो या पशु–पक्षी किसी भी रूप का बाहरी आवरण उठाकर आन्तरिक निर्माण को बारीकी से देख व समझकर अध्ययन कर चित्रित किया है। जिसमें तकनीकी अनुशासन का पूर्ण पालन है।

''आप यथार्थवादी और सशक्त रेखाओं के धनी थे आपके गाडिया लुहारों, ऊंटों व घोड़ों के रेखांकन विशेष उल्लेखनीय हैं जहां यथार्थवाद का मोह रूढ़िवादिता को पीछे छोड़ देता है। इनके रेखांकन अत्यन्त सशक्त दिखाई देते है।'' [6]

विषय की गहराई का अध्ययन इनके घोड़ों के चित्रण में मिलता है चित्रण में यथार्थ का मोह कलाकार को आकृति की आन्तरिक रचना की ओर आकृष्ट करता हैं। इन्होंने पोट्रेट कलाकार के रूप में ख्याति अर्जित की इसके अतिरिक्त गणगौर झांकी, मुगल–राजपूत युद्ध श्रृंखला, निशा आदि प्रमुख विषय रहे है।

द्वारका प्रसाद शर्मा की चित्र–श्रृंखला में तकनीकी वैविध्य इतना ही है जितना उनकी प्रयोग प्रक्रिया से चित्रों में परिलक्षित होता है। भित्ती चित्रण, जलरंग, टेम्परा, पेस्टल आदि सभी तकनीकों का प्रयोग आपने चित्र निर्माण में किया है। सौम्य रंगयौजना द्वारा यथार्थ अंकन आपकी निजी विशेषता है।

बी. सी. गुई

इनके चित्रों में आकारों द्वारा मानव मन में सोन्दर्य का संचार कर देने वाली मनःस्थिती और आत्मीय आकर्षण इनकी विशेषता हैं। कल्पना और अनुभूति का सहज संगम इन्हें जीवन्त बनाता है।

संयोजित व कोमल रेखांकन आपकी गम्भीर विशिष्टता हैं। आपकी रेखांकनों में सुक्ष्म दृष्टि, अंकन कुशलता, श्रम तथा संरचना के प्रति कलात्मक जागरूकता के दर्शन होते है।

इन्होने पारम्परिक भारतीय पौराणिक कथाओं तथा सामाजिक जीवन के दृश्य, हिमालय की तराइयाँ तथा ग्राम जीवन की मुखर दृश्यावली प्रमुख विषय रहे हैं। आपके चित्रों के विषय में भारतीयता और आध्यात्मिक शान्ति का आभास मिलता है। इनकी भारतीय जीवन दर्शन के प्रति गहरी आस्था थी।

जलरंगों के माध्यम से इन्होंने देनन्दिन भारतीय जीवन दृश्यों को सूचीबद्ध किया हैं। जलरंगों में इनकी शैली एक सुलिपीकार की सी हैं। जो रंगो की विभिन्न छवियों के परिवेश में रहकर अंकन करता है। इनकी रंगयोजना कही एक रस है तो कहीं पारदर्शी। नीला और लाल इनकी प्रिय रंग रहे है।

कृपालसिंह शेखावत

इनकी चित्रकृतियों में आकृतियों की स्पष्टता है और हलचल भरे वातावरण की सर्जना करने वाली एक विशिष्ट कलात्मकता देखते ही बनती हैं। इनके चित्रों के आकारों में राजस्थान के इतिहास, लोक साहित्य व धार्मिक चेतना की झलक मिलती है।

इनकी कला में अजन्ता की भांति कोमल रेखायें प्रधानता धारण किये हुये है। कोमल व प्रवाही रेखायें, विषय की रूपात्मक अभिव्यक्ति एवं शुद्ध व मिश्रित रंगों का अद्भुत सामंजस्य है। जो ''कृपाल शैली'' की विशेषता है।

यथार्थवादी विषय और कल्पनायें आपके चित्रों की विशेषता है। ''इनकी दो प्रतिनिधी कृत्तियों'' ''मैरिज ऑफ पाबूजी राठौड़'' तथा ''भरत कैरिंग रामाज सैडिल्स'' इनकी प्रखर प्रतिभा और तकनीक का उत्कृष्ट उदाहरण है।'' [7]

पौटरी की नीलवर्णी रंगयोजना आपकी अपनी विशेषता रही हैं। भित्तीचित्रों की टेम्परा अनुकृत्तियों में इन्होंने देशज और स्थानीय रंगो का प्रयोग किया हैं। इसके अलावा इन्होनें वाश, टेम्परा, जलरंग और ग्राफिक माध्यमों का उपयोग आपने चित्रों में किया है।

देवकी नन्दन शर्मा

परम्परागत, पौराणिक तथा सांस्कृतिक बिम्ब इनकी आकृतियों का मूल है राष्ट्रीय पक्षी मोर की विभिन्न मुद्रायें तथा भावों में अत्यधिक कुशलता है। चित्रों में हस्ताक्षर तथा परिप्रेक्ष्य का प्रयोग विशिष्ट हैं।

यथार्थ से प्रभावित किन्तु आंलकारिक रेखायें पक्षियों के निकट से अध्ययन की साक्षी है जो बहुत कम रंगो का प्रयोग और केवल रेखाओं के माध्यम से चित्र को सम्पूर्णता प्रदान करते है।

आकारों में स्वाभाविक तथा माधुर्यपूर्ण अंकन इनकी विशेष उपलब्धि हैं। इसके अतिरिक्त ढोला–मारू, ग्राम्य जीवन प्रिय विषय रहे हैं। प्राकृतिक चित्रण में कलरव करते हुये पक्षी तथा पुष्पों की महक आद्वितिय है।

फ्रेस्कों तकनीक का विशेष अध्ययन इनकी प्रमुखता है। तकनीक की दृष्टि से इन्होनें अत्यधिक वाश चित्रों का निर्माण किया तथा इन्हानेंने टेम्परा में भी चित्रण किया हैं।

इस प्रकार रामगोपाल विजयवर्गीय ने शैलेन्द्र नाथ डे (प्राचार्य, राज.स्कूल ऑफ आर्ट, जयपुर) के सानिध्य में बंगाल स्कूल का राजस्थान में सूत्रपात किया और अपनी मौलिक अभिव्यक्ति द्वारा राजस्थान की कला को समृद्ध किया।

बी.सी. गुई जिन्होंने लखनऊ, स्कूल ऑफ आर्ट्स से कला शिक्षा का अध्ययन किया जबकि वहां बंगाल स्कूल का पर्याप्त प्रभाव था। अजमेर डी.ए.वी. कालेज में आकर आपने राजस्थान की रंगीली जीवन शैली को चित्रण विषय के रूप में चुना। आपके चित्रों में पाश्चात्य चित्रण विधान का अंगूठा संगम आपकी भावानिव्यक्ति का प्राण रहा जिसके कारण आपका सृजन राजस्थान की समकालीन कला के लिये महत्वपूर्ण रहा।

भूरसिंह शेखावत ने सर जे.जे. स्कूल आर्ट्स मुम्बई से पाश्चात्य कला का अध्ययन कर टेम्परा और तैल रंगो की तकनीक का ज्ञान प्राप्त किया। शेखावत के चित्रों की अमूल्य विरासत पिलानी जैसे शिक्षा व कलाकेन्द्र का एक महतवपूर्ण अंग तथा गौरव है।

देवकीनन्दन शर्मा का फ्रेस्को तकनीक का विशेष अध्ययन वर्तमान में भी अनेक कला छात्रों का मार्गदर्शन कर रहा है फ्रेस्कों शिविर की परम्परा आज भी वनस्थली विद्यापीठ में विद्यमान है। द्वारका प्रसाद शर्मा ने ब्रिटीश चित्रकार मूलर के मार्ग दर्शन में आधुनिक कला चित्रण पद्धति का ज्ञान प्राप्त किया तथा इन्होंने मूलर की भांति तैल चित्रण पद्धति में यथार्थवादी चित्रों का निर्माण किया। चिर संघर्ष के पश्चात् जयपुर के महाराजा सवाई मानसिंह कॉलेज में पद पर नियुक्त होकर कई कला छात्रों को निर्देशित किया।

कृपाल सिंह शेखावत ने फाइन आर्ट्स लखनऊ से असित कुमार हल्दर के सानिध्य में भारतीय कला के भित्तीचित्रों के प्रभाव को ग्रहण किया इनके सृजन में नन्दलाल बसु, विनोद बिहारी मुखर्जी, राम किंकर बैज की कला का प्रभाव आया। ''ब्लू पौटरी'' कृपाल सिंह शेखावत की राजस्थान की कला को विशेष देन है।

इन सभी कलाकारों के अनधुनिक कला प्रवृतियों से भिज्ञ होने के कारण राजस्थान की समकालीन कला में एक नये अंदाज के रूप में अकादमिक गतिविधियाँ प्रारमभ हुई उपर्युक्त चित्रकारों की कृतियों में भी नवाचार एवं कला तकनीकी की प्रयोग धर्मिता का प्रभाव आया। जिसने परवर्ती चित्रकारों को प्रेरित किया।

संदर्भ

1. पृष्ठ–2, समकालीन भारतीय कला, लेखक डॉ. ममता चतुर्वेदी, प्रकाशन– राज. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, प्रथम संस्करण, 2008।
2. पृष्ठ–1, समकालीन भारतीय कला, लेखक डॉ. ममता चतुर्वेदी, प्रकाश– राज. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, प्रथम संस्करण, 2008।
3. पृष्ठ–11, लेखक–रामकुमार, राजस्थान की समकालीन कला, प्रकाशन राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर, 1989।
4. पृष्ठ–26, कला दीर्घा (अंक–6) रामगोपाल विजयवर्गीय की सृजन यात्रा, लेखक–डॉ. कमला गर्ग, अप्रेल–2003।
5. पृष्ठ–6, मोनोग्राफ, लेखक–हेमन्त शेष, प्रकाशन–राजस्थान ललित कला अकादमी, 1984।
6. पृष्ठ–8, मोनोग्राफ, लेखक–आर.बी. गौतम, प्रकाशन–राजस्थान ललित कला अकादमी, 1987।
7. पृष्ठ–42, राजस्थान की समसामयिक कला, लेखक–मीनाक्षी काजी, प्रकाशन–राजस्थान ललित कला अकादमी, 1989।